

आयताकार पतली तख्ती या रंग पट्टिका जिसे वह एक हाथ में पकड़े रहता है। arm palette

**बाहुबल** पुं. (तत्.) भुजाओं की शक्ति, शारीरिक शक्ति; पराक्रम, वीरता, बहादुरी।

**बाहुबली** पुं. (तत्.) पराक्रमी, वीर, जैन-धर्म के तीर्थाकरों में से एक।

**बाहुमूल** पुं. (तत्.) कंधे और बाँह का जोड़ या संधि-स्थान, कंधे और कोहनी के बीच का भाग।

**बाहुयुद्ध** पुं. (तत्.) मल्लयुद्ध, कुश्ती, भिड़ंत।

**बाहुलता** स्त्री. (तत्.) भुजा रूपी लता, सुकुमार भुजा।

**बाहुल्य** पुं. (तद्.) बहुलता, अधिकता, इफरात, प्रचुरता, बहुतायत, ज्यादाती, व्यर्थता, फालतूपन, बहुरूपता।

**बाहुवल्य** पुं. (तत्.) बाहुपाश, आलिंगन, भुजपाश।

**बाहु-शिखर** पुं. (तत्.) स्कंध, कंधा।

**बाह्य** वि. (तद्.) 1. बाह्य, वहन करने योग्य, खींचा/ढोया/चढ़ा जाने योग्य 2. यान, सवारी 3. भार ढोने वाला पशु 4. बाहर का, बाहरी, ऊपरी, दिखाऊ 5. अपरिचित, अजनबी 6. जाति, बिरादरी 7. समाज से बहिष्कृत 8. प्रस्तुत विषय या संदर्भ से भिन्न, भिन्न, अलग।

**बाह्य उद्दीपन** वि. (तत्.) शारीरिक अथवा मानसिक अभिक्रियाओं का किसी बाहरी क्रिया या पदार्थ के प्रयोग से उत्तेजित करना या उभाड़ने का कार्य, भाव।

**बाह्यक** पुं. (तत्.) 1. जीव 2. बाहरी, बाहर का 3. छाल, छिलका, वल्कुट।

**बाह्यचर** पुं. (तत्.) विचार-विमर्श की प्रक्रिया, विषय से असंबद्ध तर्कों से अपने पक्ष को सुदृढ़ करने का प्रयत्न।

**बाह्यजगत** पुं. (तत्.) जो कुछ अनुभव होता है या जो हमें दिखाई देता है उसको प्रभावित करने वाला बाह्य संसार।

**बाह्यमंडल** पुं. (तत्.) बाहरी आभा, किसी वस्तु के चारों ओर का परिवेश।

**बाह्यदल-पुंकेसर** पुं. (तत्.) फूलों की पंखुडियों को समेकित रूप से बाँध कर रखने वाला रूप, टहनी से ऊपर का भाग।

**बाह्यदल-पुंज** पुं. (तत्.) फूलों की बाहरी पंखुडियाँ, पुटक।

**बाह्याकृति** स्त्री. (तत्.) कोई वस्तु हमें कैसी दिखाई देती है न कि वास्तव में वह कैसी है- इसकी प्रतीति।

**बाह्यानुकूलन** स.क्रि. (तत्.) किसी प्राणी या जैव वस्तु का कालांतर में स्वयं को अपने आस-पास के पर्यावरण के अनुसार ढाल लेना।

**बिंदा** पुं. (तद्.) 1. बड़ी बिंदी, बेंदा, बिंदु, बूँद 2. वीर्य 3. बूँद के आकार का चिह्न 4. एक गोपी का नाम।

**बिंदी/बिंदु** स्त्री. (तद्.) 1. टिकुली, टिकली, गोल टीका, नुक्ता, सुन्ना, सिफर 2. शून्य 3. अनुस्वार का चिह्न 4. एक ज्यामितीय संकल्पना जिसकी स्थिति होती है पर परिमाण शून्य होता है 5. दशमलव में पूर्णांक को भिन्नात्मक भाग से अलग करने वाला बिंदु, बिंदुली, इस आकार का कोई चिह्न।

**बिंदुक** स्त्री. (तद्.) बिंदुक, बिंदु, बूँद, माथे पर की बिंदी।

**बिंदुकता** स्त्री. (तत्.) अनेक बिंदुओं का होना।

**बिंदुपथ** पुं. (तत्.) बिंदु का पथ, वह ज्यामितीय आकृति जिसका प्रत्येक बिंदु किसी नियम के अनुसार स्थित होता है और कोई भी बिंदु उस नियम के विरुद्ध नहीं होता। locus

**बिंदुरूप** वि. (तद्.) छोटे रूप या आकार का।

**बिंध** पुं. (तद्.) बिंध्य, विंध्याचल पर्वत।

**बिंधना** अ.क्रि. (तद्.) बेधन, बींधा जाना, छेदा जाना; फँसना, उलझना।